Q1. भूगोल जगत में हेटनर के योगदान की समीक्षा करें।
हेटनर को आधुनिक भौगोलिक चिंतन के विकास का प्रेरणा स्तंभ कहा जाता है। जर्मनी में भूगोल के नव चिंतन के विकास में उसका विशेष योगदान है। उसने अपने समकालिन किसी भी अन्य भूगोलवेत्ता से अधिक मात्रा में भूगोल को दार्शनिक तथा वैज्ञानिक आधार पर स्थापित किया था।

जीवनी :- अल्फ्रेड हेटनर का जन्म पश्चिमी जर्मनी में 1859 ई० में हुआ। हेटनर अपने समय के ऐसे व्यक्ति थे, जिसने प्रारम्भ से ही अपनी उच्च शिक्षा का लक्ष्य भूगोल का विशद व विवेकपूर्ण अध्ययन माना। भूगोल में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु उसने हेले, बॉन एवं स्ट्रासबर्ग विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। 1881 ई० में उसने महान भूगोलवेत्ता जरलैण्ड के निर्देशन में 'चिली एवं पैटागोनिया का जलवायु एवं भू-विज्ञान' विषय पर शोध कार्य कर डाक्टरेट (Ph.D.) की उपाधी प्राप्त की। 1881 ई० में वे कोलम्बिया (द० अमेरीका) में ब्रिटिश राजदूत के शिक्षक बन कर गए। जहाँ वे 1884 ई० तक रहे। इसी बीच उन्होंने कोलम्बिया एवं एण्डिज पर्वतीय क्षेत्र की यात्रा की और 'कोलम्बियाई एण्डिज की यात्राएँ' नामक एक ग्रन्थ लिखा। डेविस तथा हम्बोल्ट की तरह सुदूर व अज्ञात प्रदेशों की यात्रा करने का मोह इन्हें सदैव बना रहा। अतः 1888 ई० में वे पुनः कोलम्बिया के अगम्य क्षेत्रों के दौरे पर गए। इस बार उन्होंने कोलम्बिया से चिली के बीच के प्रदेशों की यात्रा नाव, पैदल, [illegible] व अन्य साधनों से की। अल्या-

मे भूगोल के विभागाध्यक्ष का पद मिला। जहाँ वे 1928 ई० तक कार्यरत रहे। इन्होंने उत्तरी अमेरीका, एशिया व पश्चिमी यूरोपिय देशों की यात्रा की। पेश्चल व डेविस से सैद्धांतिक मतभेद के कारण वे अमेरीका नही जा सके।

हेटनर ने अपनी रचनाओं एवं शिष्यों के माध्यम से भूगोल की अभूतपूर्व सेवा की। हेटनर की कोई संतान नही थी। उनके लिए उनके छात्र ही पुत्रवत थे। जिन्हें, उन्होंने सच्चा स्नेह दिया।

__प्रमुख रचनाएँ__ :- 1881 ई० से अपने शेष जीवनकाल तक उन्होंने बराबर भूगोल के दर्शन को सजीव बनाए रखा। इस हेतु वे निरंतर शोधपत्र लिखते रहे। इन्होंने एक भूगोल पत्रिका GEOGRAPHISCHE ZEITSCHRIFT का प्रकाशन व सम्पादन किया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित है—

(i) चिली एवं पैटागोनिया की जलवायु एवं भूगोलन।
(ii) कोलम्बियाइ एण्डिज की यात्राएँ
(iii) भूगोल का आधार (Foundation of Geography)
(iv) तुलनात्मक प्रादेशिक भूगोल
(v) रूस का भूगोल
(vi) महाद्वीपों का धरातलीय स्वरूप
(vii) भू तल पर संस्कृति का प्रसार
(viii) विश्व का वृहद प्रादेशिक भूगोल
(ix) मानव भूगोल
(x) भूगोल : उसका इतिहास, लक्षण एवं विधि

__चिन्तन एवं अध्ययन विधि__ :- हेटनर के भौगोलिक चिन्तन पर कान्ट, रिटर, हम्बोल्ट एवं

Scanned with CamScanner

रिचथोफन का प्रभाव पड़ा था। वे द्वैतता के विरोधी थे एवं उन्होंने ~~[struck]~~ भूगोल के समन्वयकारी स्वरूप को महत्वपूर्ण माना। हैटनर ने कहा -"THE GEOGRAPHICAL SCIENCE ~~[struck]~~ DEALS ABOVE ALL ELSE WITH THE AREAS OF EARTH'S SURFACE IN SO FAR AS THESE HAVE MATERIAL CONTENT. THAT IS WITH THE DESCRIPTION AND SPECIAL RELATION OF PLACES. THERE FORE GEOGRAPHY IS THE. CHOROLOGICAL SCIENCE OF EARTH SURFACE." अर्थात भूगोल भूतल का क्षेत्र वर्णन विज्ञान है।

उन्होंने क्षेत्र विवरण में तीन बातों को प्रधानता दी—

(i) भूतल के विभिन्न स्थानों पर भिन्नताओं का मिलना एक स्वभाविक लक्षण है। एक स्थान की घटनाओं के लक्षणों का दूसरे स्थल पर प्रायः मेल नहीं बैठता। प्रत्येक क्षेत्र का अपना अलग व्यक्तित्व होता है।

(ii) भूतल पर क्षेत्रों की इन घटनाओं का स्थिति के संदर्भ में संबन्ध रहता है। अतः क्षेत्र निर्धारण एवं क्षेत्र विवेचना और भी आवश्यक हो जाती है।

(iii) भूतल के छः प्रमुख प्राकृतिक घटकों ~~[struck]~~ स्थल, वायु, जल, पशु, वनस्पति एवं मानव में वास्तविक अन्तर्सम्बंध है। उनके विभिन्न क्रियाकलाप गतिशील है एवं एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

इन्होंने स्पष्ट किया कि मानव भूमि पर आवास के द्वारा अपने स्वराज्य, इकाई, क्षेत्र या प्रदेश को स्थापित करता है। ~~[struck]~~ इनके अनुसार - "IT ALSO DEMANDS THOROUGH APPRAISAL OF THE NATURAL ENVIRONMENT BOTH AS AN END IN ITSELF (PHYSICAL GEOGRAPHY PROPER) AS WELL AS IN THE RELAVANCE TO HUMA

OCCUPANCE."

हैटनर ने सदैव अपने को नियतिवादी चिंतन से दूर रखा। वे स्पष्टतः संभावनावादी विचारधारा की ओर बढ़ते रहे। उनके अनुसार मानव स्वयं एक क्रियाशील प्राणी है। वह प्राकृतिक वातावरण का उपयोग स्वयं के अनुभव व विज्ञान के आधार पर करता है। प्रकृति संभावनाएं व्यक्त करती है, और मानव अपनी क्षमता व आवश्यकतानुसार उनका उपयोग करता है। उनके अनुसार - "NATURE IS NEVER MORE THAN AN ADVISER" अतः उन्होंने प्रकृति के आधिपत्य को कभी नहीं स्वीकारा। उन्होंने उन विद्वानों की आलोचना कि जो प्रदेश को WATERTIGHT COMPARTMENT मानते थे। उनके अनुसार प्रकृति एवं मानव के बीच इतना गहरा सम्बंध है कि उसे एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

Scanned with CamScanner